वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी – 2016

माता – पिता अंक

* पिता का सुन्दर रूप
* कुर्बानी की मूरत
* मां का रूप
* इब्राहिम लिंकन का एक पत्र
* मां को श्रद्धांजली
* माता पिता और बच्चे
* शुभ संग्राम

माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे

वह गोदियों में अपनी हर दम उठाने वाले,
वह दूध ओर मलाई मक्खन खिलाने वाले,
वह प्यारी प्यारी बातें करके हंसाने वाले,
हमदर्द पासबां और दुख से बचाने वाले,
अहसान उनके ऐसे हर दम जपा करेंगे,
माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। 1

उन्हीं की कोशिशों से चलने का ढंग आया,
उन्हों ने सर खपाया और बोलना सिखाया,
फिर ये वही जिन्हों ने स्कूल में बिठाया,
जिसे ने हमें पशु से इन्सां है बनाया,
सीने पै फैज़ सारे लिख कर रक्खा करेंगे,
माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। 2

मुद्दत तलक हमारे दर्द आशना वही थे,
आराम गाह वही थे मुशकल कुशा वही थे,
खुराक और पोशण का आसरा वही थे,
हम अदना हस्तियों की पुशते पनाह वही थे,
यह बात भूलने न हरगिज़ दिया करेंगे,
माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। 3

वह पैसे उन से लेना उनको सता सता कर,
दिक़ बार बार करना आफ़त उठा उठा कर,
ज़िद करना रूठ जाना मुंह को बना बना कर,
कपड़ों को फाड़ लाना यूंही फंसा फंसा कर,
इस नीचता पै अपनी नादम हुआ करेंगे,
माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। 4

गर वह किसी ख़ता पर उच्च दुख अज़ाब देंगे,
हम हाथ से न जाने अदबो अदाब देंगे,
नीची नज़र से देखकर धीमा जवाब देंगे,
अपने बुरे अमल को फिर तज शताब देंगे,
और यूं खुशी का उनकी बाइस हुआ करेंगे,
माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। 5

उनकी मुसीबतों में हम ग़मगुसार होंगे,
बीमारियों में उनकी ख़िदमतगुज़ार होंगे,
वारेंगे उन पै तन मन धन से निसार होंगे,
सेवक सपूत मिसले सरवन कुमार होंगे,
नक़शे कदम पै अपने गुर के चला करेंगे,
माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। 6

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 1

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | जनवरी – 2016 | वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

पिता का सुन्दर रूप

बेशक मां का स्थान बच्चे के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, पर बच्चों की परवरिश में पिता के योगदान को भी कम करके नहीं आंका जा सकता। बच्चे में माता के साथ पिता का अंश भी जुड़ा हुआ होता है। बच्चे का जन्म जिस प्रकार मां को मां का दर्जा देता है, उसकी ममता उमड़ती है, उसी प्रकार पिता का दर्जा पाकर पिता भी गर्वित अनुभव करता है। फिर माता पिता दोनों ही उस मासूम की पालना में जुट जाते हैं। जहां मां उसे अपना दूध पिलाकर, उसको बड़ा होते देखकर खुशी से फूली नहीं समाती, पिता खून पसीना बहाकर धन कमाकर बच्चों की हर ख्वाहिश को पूरा करता है। जिन बच्चों के सिर पर पिता नहीं रहते, वह इस घाटे को अनुभव कर सकते हैं।

बच्चे के थोड़ा बड़े होने पर उसके साथ खेलना, उसको छाती पर लिटाना, उसे सुख पहुंचाता है, माता पिता दोनों के बीच सोकर बच्चा सुरक्षित अनुभव करता है। थोड़ा और बड़ा होने पर बच्चे को साईकल सिखाना, उसको अच्छे बुरे की नसीहत देना, यदि कोई लड़ाई झगड़ा हो जाए तो बच्चे के साथ सुरक्षा कवच बन कर खड़े होना, यह एक पिता ही कर सकता है। क्योंकि जिन बच्चों के सिर से पिता का साया उठ जाता है, उनकी माताऐं अकसर कहती सुनी जाती हैं कि बेटा अगर कोई बाहर झगड़ा हो जाए, तो चुपचाप घर आ जाना, तेरे सिर पर बाप नहीं जो तुम्हारे साथ खड़ा होगा। इससे कई बार बच्चे भीरू बन जाते हैं। उनका आत्म विश्वास कम हो जाता है। पिता का साया बच्चे के all-round विकास के लिए अति आवश्यक है। पिता का दुनियां का अनुभव और साधारण ज्ञान अक्सर माताओं से अधिक होता है, इसलिए बच्चों के साथ वार्तालाप में पिता अपना ज्ञान बच्चों को देता है। अपने दुनियां के अनुभव बताकर दुनियां में आने वाली कठिनाईयों से सुचेत करता है।

बच्चों का कैरियर बनाने में पिता का योगदान बहुत महत्वपूर्ण होता है। मां का अथाह प्यार और पिता की परिपक्व सोच और guidance बच्चे के सर्व्वांग विकास के लिए अवश्यक है। पिता बच्चों के लिए धन जुटाने में कितनी कठिनाईयों में से गुज़रता एक मध्य – वर्गिय परिवार ही जानता है।

कोई माता पिता बच्चों से दूर रहना नहीं चाहता, मेरे सामने बहुत से उदाहरण हैं कि जहां घर की सुख सुविधाएं छोड़कर पिता विदेश चले गए। सालों घर से बाहर रहे, साल में एक आध बार आए और फिर उस कठिनाई और बच्चों और पत्नी से वियोग की जिन्दगी जीने के लिए विदेश चले गए।

दो घटनाएं मेरी आखों देखी हैं। एक परिवार से हमारे अच्छे सम्बन्ध थे। उनकी बहुत खूबसूरत लड़की थी, जिसकी शादी हो गई और 4 – 5 वर्ष बाद ही उनके पति यह सोचकर कि वह अपनी कमाई से बच्चों का अच्छा भविष्य नहीं दे सकते, वह विदेश चले गए। वहां से जितनी कमाई थी, बच्चों के लिए भेजते रहे, बच्चों को वह सब कुछ दिया, जो यहां रहते वह नहीं दे सकते थे। पूरी जवानी की उमर उन्होंने अकेलेपन में काट दी। खाने का सही प्रबन्ध न होने पर शूगर और ब्लड़प्रैशर के मरीज़ बन गए। बच्चे जवान हो गए, लड़के को बहुत हाई कलास स्कूल के होस्टल में डाला, परन्तु जो वह चाहते थे, वह बच्चा न बना, उनको बहुत सदमा लगा, इतने में उनको इजाज़त मिल गई और उन्होंने पत्नी और बच्चों को अमरीका बुला लिया। मैं तब उनके पास वहां गई थी। वहां पर भी वह लड़के को लेकर परेशान थे। लड़के की रत्ती भर भी एहसास नहीं था कि उसके पिता ने अपनी जवानी, अपनी सेहत उन पर कुर्बान कर दी है। बहुत नेक इन्सान थे। लड़की की उमर बड़ी हो गई थी, वह साथ न जा सकी, उसके अपने से सब तरह से घटिया दर्जे के लड़के से शादी कर ली, वह भी उन्हें गहरा सदमा लगा। उन्होंने चण्डीगढ़ में अपनी एक कोठी बना ली और मुझे बताया कि बहन जी बस लड़के की शादी करके हम पति पत्नी चण्डीगढ़ रहेंगे। एक मंजिल किराए पर दे देंगे और हमारी दोनों की पैन्शन होगी, अब हम इक्ट्ठे जीना चाहते हैं। लड़के की शादी करने चण्डीगढ़ आए , इतनी भागदौड़ की कि शादी से कुछ दिन पहले ही हर्ट अटैक से मृत्यु हो गई। यह एक पिता की कहानी नहीं, एक – 2 पिता अपने रात दिन के सुख चैन खो देता है, ओवर टाईम करता है ताकि वह अपने बच्चों की सुख सुविधाएं दे सके, परन्तु सधारणत: बच्चे उसकी कदर नहीं करते, उल्टा उनकी मांगे बढ़ती जाती हैं और माता पिता निराशा का जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

एक और पिता की जिन्दा उदाहरण मेरे सामने है। वह अच्छी जमीन के मालिक थे, परन्तु बच्चों को शहर में बेहतर जिन्दगी मिल सकती है, इसलिए शहर में आकर रहने लगे। कुछ ऐसे हालात हुए कि जिस कारोबार के लिए वह ज़मीन बेची थी, वह न चल सका, आखिर वह किसी प्रकार किसी कंपनी की सहायता से इंग्लैंड चले गए। वहां जाकर वह ज़मीन का मालिक अकेला, कम पढ़ा लिखा नौजवान मजदूरी करने लगा। उसके हाथों और पैरों में छाले पड़ जाते, पट्टिया बांधकर वह काम करता और अपना कम से कम खर्चा करके, सारी कमाई बच्चों को भेज देता। उसकी कुर्बानी को देखकर दिल पिघल जाता। फिर किसी मेहरबान ने सहायता की और कुछ बेहतर काम उन्हें दे दिया, वहां बिमार होते, कई बार ऐसा हुआ, वह कष्ट सहते रहते, परन्तु डाक्टर के पास न जाते कि रूपये खर्च होंगे, क्योंकि वह वहां के नागरिक तो थे नहीं। उनकी कुर्बानी से उनके बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ गए, अब वह Settled हैं। परन्तु सालों उस अकेलेपन ने उनको depression दे दिया, अब सब कुछ होते हुए भी निराशा से घिरे रहते हैं। अपनी सारी जवानी बच्चों पर वार दी, यह है पिता का रूप प।

मैं अपने पिता को जब याद करती हूं तो बेइख्तियार उनके चरणों में झुक जाती हूं। उन्होंने 70 वर्ष पहले अपनी सैकड़ों रूपये की डाक्टरी की प्रैक्टस छोड़ी, गुरू के दर के शैदाई थे, उनके मिशन में ज़िन्दगी भेंट कर दी और परिवार के लिए यू.पी में एक बहुत उपकारी के कहने पर उनके सम्बन्धी के साथ ज़मीन ले

ली। परन्तु 2 – 4 वर्ष में उन्होंने ज़मीन पर इतना कर्ज़ा कर दिया कि मजबूरन उन्हें गुरू का काम छोड़कर यू.पी. जाना पड़ा। जाते हुए वह बिलख बिलख कर रोते थे। परन्तु हम बच्चों के लिए उन्होंने यह कुर्बानी दी। वहां जाकर जो उन्हें संघर्ष करना पड़ा, जिस प्रकार रात को दमें का दौरा पड़ता, दवाईयां लेकर सुबह फिर कोई न कोई काम शहर जाना पड़ता।। यह सच्च है कि उनके वा मेरी माता के अनथक संग्राम ने हम सब बच्चों को Settle कर दिया, परन्तु उन्होंने वहां जान की बाजी लगाई हुई थी, वहां की आबोहवा उनकी बिमारी के प्रतिकूल थी, परन्तु उन्होंने परवाह नहीं की, माता पिता को उस कुर्बानी का फल हम आज भोग रहे हैं। आख़िर हम सब को settle करके वह गुरू दरबार में आ गए और टूट फूट कर सारे गुरू से सम्बन्धित स्थानों पर अनथक सेवा की और हमें भी परसेवा के लिए हमेशा प्रेरित करते थे। एक दिन शाम के समय हमारे घर में आए, मैं सेहन में लेटी हुई थी, वह पूछने लगे कि क्या हुआ बेटा, तो मैंने बताया कि पिता जी मेरी सिर बहुत दर्द कर रहा है, तो वह मेरे सिरहाने बैठ गए और बैठकर मेरा सिर दबाने लगे, ऐसे लगा जैसे उनके प्यार का जादू भरा हाथ था कि कुछ देर बाद मुझे बहुत ठीक अनुभव हुआ, इस स्थान की और उनके इस रूप को मेरे दिल पर गहरी छाप है।

जहां मां का प्यार अनमोल है, वहां पिता का साया एक संरक्षक का है। बहुत सौभाग्यवान हैं वह बच्चे जिनके पास माता पिता बड़ी उमर तक रहते हैं और उनका दुर्भाग्य है जो अपने माता पिता की कदर नहीं करते या इससे भी बढ़कर उन्हें दुख पहुंचाते हैं। परम पूजनीय भगवान को जितना भी धन्यवाद दें थोड़ा है, जिनकी कृपा से हमें और आगे हमारे बच्चों को यह शिक्षा मिली है कि माता पिता का उपकारी रूप कुछ नज़र आता है।

माता पिता के सम्बन्ध मूं यह विशेष साधन के दिन हैं। गुरू महाराज ने कृपा करके हम अबोधियों को एक एक सम्बन्ध को सुधारने के लिए आदेश दिए हैं। उनके उन आदेशों को पढ़कर हमें अपना असल रूप नज़र आ सकता है कि हम कहां खड़े हैं। इन दिनों को सफल करने के लिए हमें अपने माता पिता की सेवाओं, कष्टों और कुर्बानियों को याद करके उनके आगे झुकना चाहिए। उनके उपकारों को अगर लिख सकें तो और भी लाभ हो सकता है। यदि हम में कोई अच्छे गुण विरासत में आए हैं तो वह भी हमारे माता पिता की कृपा से है। मैं तो जब सोचती हूं कि मेरे माता पिता ने किन कष्टों में से गुज़रकर हमें पढ़ा दिया, जिससे एक ओर हम अपने पैरों पर खड़े होने और आत्म सन्मान के साथ जीने के योग्य हुए। यदि पढ़ी हुई न होती तो परम पूजनीय भगवान की अद्वितीया शिक्षा को समझ ही नहीं सकते थे। हमारी एक एक ख्वाहिश को पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी ज़रूरतें कम की हैं, शिक्षकों के आगे हाथ बांधे हैं, हमें सन्मान पूर्वक जीने के योग्य बनाया है। हमारी खुशियों में दिल की तह से खुश हुए हैं। दुख में, बिमारी में रातें जागे हैं, क्या क्या संर्घष नहीं किया। एक एक माता पिता ने गरीब होकर, कर्ज़े उठाकर भी बच्चों का भविष्य बनाया है, हमारा शत: शत: प्रणाम है माता पिता को। जिनके माता पिता हैं, वह दिनों में उपकार भरे पत्र लिखें, उन्हें भेंट दें, जो इस दुनियां में नहीं हैं, वह भी उनके उपकारों का स्मरण करके उनके शुभ की कामना करके अपना भला कर सकते हैं।

सुरजीत बराड़

कुर्बानी की मूरत

"मैं जो कुछ भी हूं, और जो कुछ बनने की आशा करता हूं, यह सब मेरी देवता – स्वरुप मां के सदका है ।" यह शब्द इब्राहिम लिंकन ने उस समय कहे थे, जब वह अमरीका के प्रधान नहीं बने थे।

थामस ऐडीसन ने कहा है, "मुझे मेरी मां ने बनाया है, वह इतनी सच्ची और मेरे पर विश्वास करने वाली थी कि मुझे लगता था, कि मेरे लिए संसार में जीने की कोई वजह है, मां एक ऐसी जान है कि जिसे मुझे कभी निराश नहीं करना चाहिए ।"

माता के अथाह ऋण की शहादत संसार के महा पुरुषों के जीवनों से प्रत्यक्ष मिलती है। ऐसे गिनती के ही महान पुरुष होंगे जो माता के प्यार और उत्साह भरे हुलारे के बिना ऊंचे उठे हों।

प्रसिद्ध कलाकार बैंजामिन कहा करते थे, "मां के एक चुम्बन ने मुझे पेंटर बना दिया।"

अधिकतर जन अच्छी प्रसिद्धि केवल अपनी सर्वस्व निछावर करने वाली, कुर्बानी की मूर्ति माताओं की कृपा से पाते हैं। हम देखते हैं कि कैसे गवर्नरों, मिनिस्टरों और लीडरों का जिन्दाबाद के नारों से स्वागत किया जाता है, परन्तु उनकी सफलता की वास्तविक देवी बेचारी, अज्ञात, चुपचाप जीवन व्यतीत करने वाली अन्धेरों में खोई हुई माता को कोई नहीं पूछता।

यह अजीब दास्तान है उस मां की। एक सृजनकर्ता को इतना कम महत्व दिया जाता है और संसार में सफलता प्राप्त करने वालों के साथ उसका नाम तक नहीं लिया जाता है। हिंसक संसार सफल बेटे को तो देखता है, पर मां जो उसे ऊपर ले जाने की सीढ़ी बनी, उसको बिसार दिया जाता है। उसका नाम या फोटो हम अखबारों में नहीं देखते, जबकि प्यारी और मेहरबान मां ही इन सफलता को सम्भव बनाती है।

मां के भीतर से फूटने वाला प्यार का स्त्रोत हमारे भीतर की ईर्ष्या, द्वेष और घृणा भावनाओं का दमन करता है। संसार की महान नायिका मां है। न उस जैसी कोई कुर्बानी कर सकता है, न दुख और कष्ट सहन कर सकता है। मां बिना किसी शिकवा शिकयत के बच्चों की सेवा करती है।

मां अपने शरीर, खून, सुख, आराम और मान सन्मान की खाद डालकर अपने बच्चों के जीवन रूपी पौधे को सींचती है। एक एक अनपढ़ मां अपने बच्चों को पढ़ाने की ख़ातिर मैंने देखा है कि किस प्रकार रात दिन मजदूरी करती है। अध्यापिकाओं के आगे गिड़गिड़ाती है, कई बार शराबी कबाबी पति की अवहेलना और अपमान सहकर भी वह पैसे जोड़ जोड़कर बच्चों का खर्च पूरा करती है।

मैंने प्रिंसीपल होते हुए अपने अनुभव से कितनी माताओं को हाथ बांधे, पैरों को हाथ लगाते देखा है कि जिनके आर्थिक हालात ठीक नहीं, पति निखट्टू है, पर मां एक ओर पति का दुर्व्यवहार सहन करती है और दूसरी ओर मज़दूरी करती है, फिर पति की विरोधता भी सहन करके बच्चों को शिक्षित बनाना चाहती है। एक मां की चार लड़कियां है। वह पहली क्लास से हमारे स्कूल में दाखिल की थी। मां की सेहत इतनी कमज़ोर दिखती थी कि उसके चेहरे का पीलापन उसके भूखे पेट रहकर बच्चों को पालना दर्शाता था, हमने जो सम्भव था उसे सहयोग दिया और उसकी बड़ी लड़की बारहवीं क्लास पास कर गई है, बाकि की भी ठीक पढ़ रही हैं। उनकी याचना उसके मातृत्व को दर्शाती है। अपने बच्चों के लिए सर्वस्य अर्पण करने वाली एक मूर्ति दिखाई देती है।

इसी प्रकार एक एक मां को हम संघर्ष करते हुए देखते हैं कि वह चाहे कितनी थकी हुई हो, चाहे उसे आराम और सुख के कोई हालात उपलब्ध न हों, उसकी स्वास्थ्य चाहे कितनी खराब चल रही हो, चाहें नींद भी बच्चों को देख रेख में पूरी न होती हो, परन्तु वह कभी शिकायत नहीं करती। अपनी सहनशक्ति से वह सारे परिवार के जख़्मों पर मरहम लगाती है।

मां की सुन्दरता इस संघर्ष में धीमी पड़ जाती है, चेहरे पर फिक्र और दुख की लकीरें उभर आती हैं। उसके पास कुछ न रहे, परन्तु बच्चों को सुखी देखना चाहती है। बच्चों की सेवा में उसका अस्तित्व घुल जाता है, परन्तु वह शिकायत नहीं करती।

क्योंकि और साहसिक कार्यों के लिए सन्मान मिलता है, परन्तु मां के बलिदान और साहसिक कार्यकलापों का बदला बच्चे उसे दुखी करके चुकाते हैं। एक एक मां 6 – 6 और 7 – 7 बच्चों को पाल लेती है, परन्तु सारे बच्चे मिलकर एक मां को सुख पूर्ण जिन्दगी नहीं दे सकते, कितना बड़ा दुर्भाग्य!

बच्चों के लिए यदि कोई जान दे सकता है तो वह मां है। उसके लिए बच्चे के मुकाबले में जान की कीमत सस्ती है। इसलिए तैरना न जानकर भी एक एक मां अपने डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए पानी में छलांग लगा देती है।

अकसर परिवार में मां से अधिक किसी का पार्ट नहीं होता, परन्तु उसको अनादृत जीवन बसर करना पड़ता है। शादी होने के बाद लड़के अक्सर घर में मां को अपने बच्चों की देखभाल की ज़िम्मेवारी सौंप देते है। मां से स्वार्थ सिद्धि की लालसा मनुष्य की बड़े होकर भी समाप्त नहीं होती। मां अपने हक के लिए बच्चों से नहीं झगड़ सकती। कभी कभी तो बच्चों की कृतघ्नता की सीमा पार हो जाती है जब मां के कुछ कुछ दिन बांट कर सम्भालने का प्रस्ताव रखते हैं, कभी कभी मां और बाप को अलग रहने के लिए मजबूर कर देते हैं – जिससे बुढ़ापे का एक दूसरे का सहारा भी छिन जाता है।

अपने निकम्मे बेटे को भी कालिज तक पढ़ाने के लिए जिस मां ने किसी के बर्तन साफ किए हों, कपड़े धोए हों और छोटे से छोटा काम करना स्वीकार किया हो, उस मां के दिल पर क्या गुजरती होगी जब बेटा पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी और हालात रखकर मां से आंखे फेर लेता है और उसे रहने और खाने के लिए अपमान जनक जीवन व्यतीत करना पड़ता है। परन्तु फिर भी मां बच्चे की शत्रु नहीं बन सकती, उसके लिए आशीष ही देती है। कहा जाता है कि एक कृतघ्न बेटा अपनी प्रयेसी के कहने पर मां का सिर काट कर ला रहा था, परन्तु वह रास्ते में किसी पत्थर से टकराकर गिर पड़ा और मां का सिर भी गिर गया और उससे आवाज आई कि बेटा कहीं चोट तो नहीं लगी। बेशक यह कल्पित कहानी है, परन्तु मां के विशाल हृदय की प्रतीक है।

मां की कुर्बानी और भी बढ़ जाती है जब जवानी की उमर में उसका जीवन साथी बिछुड़ जाता है और 3 – 4 बच्चों का बोझ उस अकेली जान पर पड़ जाता है। वह जवानी में शादी करवा सकती थी, परन्तु बच्चों की खातिर वह अपना सुख पीछे छोड़ देती है, फिर रात दिन मेहनत करके बच्चों की परवरिश में अपनी जवानी अपनी सुन्दरता की आहुति दे देती है। नेचर ने मां के रूप में क्या सुन्दर मूर्ति घड़ी है। ऐसी कुर्बानी की मूर्ति बच्चों के मुख से प्यार और स्नेह के शब्द सुनने को तरस जाती है। कितना बड़ा दुर्भाग्य है मानवता का। मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति तब तक ही मां से सम्बन्ध रखती है, जब तक सुख मिलते हों, जब मां से सुख की आवश्यकता नहीं रहती, तो वह फालतू की वस्तु दिखने लगती है, उसके लिए घर में सबसे निकृष्ट कमरा

निश्चित कर दिया जाता है, वह अपने बच्चों से बात करने को तरस जाती है। जब मां के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं तो यह भूल जाते हैं कि वह समय दूर नहीं होता जब हम उस अवस्था में पहुंच जाऐंगे और अपने बच्चों के सामने हमने जो आदर्श रखे हैं – वह उन्हीं का पालन करते हुए, हमारी भी यही दुर्दशा करेंगे।

एक बड़ा सुन्दर उदाहरण पढ़ा था, जो बहुत सबक सिखाने वाला है। एक परिवार में बूढ़ी मां थी, जिसको सबसे घटिया रजाई दी हुई थी। घर में सबके पास रेशमी रजाईया थीं, उनका छोटा बेटा अर्थात मां का पोता यह देखता था। एक दिन उसने अपनी दादी की आधी रजाई काट दी और अपने पास रख ली। जब उसके माता पिता को पता लगा तो उन्होंने उसे खूब डांटा और पूछा कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया? बच्चे ने भोलेपन से उत्तर दिया कि "मैंने देखा है कि हमारे घर में कोई पुरानी रजाई नहीं, जब आप बूढ़े हो जाओगे तो मैं आपको क्या दूंगा? यह रजाई मैंने आपके लिए रखी है।" यह सुनकर उसके माता पिता के पैरों तले से जमीन निकल गई और उस छोटे से बच्चे ने उन्हें अच्छा सबक सिखा दिया। यह सच्चाई है कि हम जैसा बोऐगे, वैसा ही काटेंगे। इसलिए माता का निरादर आपको अपने जीवन के लिए भी मंहगा पड़ता है। बच्चों ने आपके संस्कार ग्रहण करने हैं। कितना सुन्दर दृश्य होता है, जहां माता पिता का आदर होता है, उन्हें उपयुक्त स्थान दिया जाता है। ऐसा करके बच्चे उनकी सच्ची खुशी प्राप्त करते हैं। जहां कृतज्ञ बच्चे हैं, वहा माता पिता तिरस्कृत नहीं होते। माता के विषय में अलम साहिब ने बहुत सुन्दर भजन की रचना की थी जो नीचे दिया हुआ है।

(सुरजीत बराड़)

भजन

मेरी माता जन्म दाता, तुम्हीं से जिन्दगी मेरी,
तुम्हीं रक्षक सदा मेरी, तुम्हीं पुश्तों पनाह मेरी।
तेरा उल्फत भरा दिल, गर न होता पासबां मेरा,
तो बेहोशी में जाने क्या, हुई होती दशा मेरी ।
कड़ाकेदार जाड़ों में, अगर मैं रात को उठती,
किसे बेदार करती थी, सिवा तेरे सदा मेरी ।
अन्धेरी रात तूफां में, कलेजे से लगा लेती,
मुबादा ख़ौफ़े दहशत से, हो जां नन्हीं हवा मेरी ।
ज़बाने बेज़ुबानी में, जो मैं कुछ बात करती थी,
कोई समझे न मतलब तू, समझती बात का मेरी ।
हुई बिमार मैं और रात दिन तड़पा किया तूने,
मुसीबत तुम पे होती थी, मुसीबत से सवा मेरी।

अजब तासीर हाथों में है, रंजो गम भुलाने की,
नजर उल्फत भरी तेरी, है दुखों को दवा मेरी।
मेरे दुख के तेरे दिल में, खटकने से यह साबित है,
बना रखी है अपने दिल में, तूने इक जगह मेरी
कोई साथी रफ़ीक ऐसा नहीं, जैसी कि तू माता,
वह साथी ऐश के और तू शरीके हर बला मेरी।
दिया उपकार का बदला, तुझे उल्टा सताया है,
मुझे अब याद आती है वफ़ा तेरी जफ़ा मेरी।
कभी शिकवा न इस पर भी, जबां से तेरी सुन पाया,
तुझे देखा तो बस करते हुए सिफ़तो सना मेरी।
रही ग़फलत में गो बरसों, अलम दिल में समाया है,
मैं अब तुम्हारा बन जाऊं, रही है तू सदा मेरी।

मां का रूप

यदि कहीं एक जीवन दूसरे जीवन में जिया जा सकता है तो उसका नमूना माँ है। बच्चे की लोक प्रियता को कलंक लग गया है। दुनिया में लोगों ने उसे अपने द्वार से धतकार दिया है। तो भी माँ, जैसे वह बच्चे की सफलता पर उस बच्चे से भी अधिक प्रसन्न होती थी, वैसे ही उसकी हर बदनामी को उस से भी अधिक अपनाने में तृप्ति पाती है। पर साधारणत: बच्चों को माँ के प्यार का महत्व उसी समय अनुभव होता है जब यह महान प्यार उन से सदा के लिए छिन जाता है। बच्चों के दुर्गम पथ पर माता अपने अनुपम प्यार के पुष्य अंजलियां भर भर कर बखेरती रहती है। उन फूलों से भरे टेढ़े मेढ़े रास्तों पर बच्चे निर्भय होकर गुजरते रहते है, इस बात से पूर्णत: अनजान कि कितनी बार इन फूलों की मोटी तह ने उन्हें गिरने से बचाया है। दुर्घटनाओं से भरे जीवन की फिल्म निरन्तर चलती जाती है, और माँ का प्यार मन्द, मधुर संगीत बन कर उसके साथ ताल देता रहता है। इस ताल का जीवन के सुखद प्रवाह के साथ क्या सम्बन्ध है, इसका ज्ञान उसी समय होता है, जब वह ताल टूट जाती है, और जीवन की फिल्म शुष्क होती हुई गिरारियों पर खड़खड़ाती चलती है।

संसार के महापुरुष इब्राहिम लिंकन, टैगोर बनाड्रशा तथा अनेकों अन्य व्यक्ति अपनी माताओं को लिंकन के इन शब्दों में स्मरण करते है, जो कुछ मै हूं और जो कुछ मैं बनने की आशा रखता हूँ अपनी फरिश्ता तुल्य माता के ही कारण है। बाल्य काल में बच्चा अपनी माँ के तुल्य किसी खजाने को नहीं सोच सकता है। वह केवल अपनी माँ का दूध ही नही पीता। उसके हृदय के रक्त को कई प्रकार अपने प्राणों का अंश बनाता है। परन्तु बाल्यावस्था व्यतीत हो चुकने पर एक समय ऐसा आ जाता है कि जब मां के हृदय के रक्त की मनुष्यों को आवश्यकता नहीं रहती । माँ के जीवन से बाहर उनके जीवन का ताना दूर या निकट कहीं और तना जाता है। उन्हें कई प्यार और कई साथी मिलते है। सफलताओं और मान यश का नशा होता है। उस समय वह कितने कितने समय तक अपनी माँ के अस्तित्व को ही भूल जाते हैं। अनेक बार पत्नी की ओर से माँ पर हुए अन्याय को भी अनुभव नहीं करते। माँ अपने पुत्र की सफलता के विषय में जानना चाहती है। पुत्र विस्तारपूर्वक बात करने का समय नहीं निकाल सकते। माँ अपने पुत्रों की चिन्ताओं में भी भाग लेना चाहती है। पुत्र विस्तारपूर्वक बात करने का समय नहीं निकाल सकते। माँ अपने पुत्रों की चिन्ताओं को माता की शक्तिहीन अवस्था के ऊपर समझ कर चुप रहते है। माँ को मिले बिना ही वह कई बार बाहर चले जाते है। जब वह घर वापिस आते हैं तो अनेक बार माँ की बाहें खुली की खुली ही रहजाती है और पुत्र नमस्कार करके जल्दी जल्दी पास से गुज़र जाते है।

जवान बन कर पुत्र समझता है कि अब उसका अपनी जीवन इतना बलवान हो गया है। कि बूढ़ी माँ अब उसे कोई बल प्रदान नहीं कर सकती। वह नही जानता कि जीवन उपरोक्त बल से भी अधिक सहानुभूति और प्यार का मोहताज है। और माँ को छोड़ कर किस का प्यार स्थाई है और किस की सहानुभूति और सराहना अटल है? अच्छे अच्छे मित्रों की मित्रता में उदासीनता आ जाती है। पति पत्नी की वफ़ादारी लड़खड़ा जाती है।

तुम्हारे घर का वह स्थान जहां तुम्हारी माँ तुम्हारे कामों में दखल न देती हुई भी तुम्हारे लिए शुभ कामनाएं करती रहती है, वह निर्मल मधुरता का स्त्रोत है। जब तुम हंसते आते हो तो इस स्त्रोत के निर्मल जल पर तुम्हारी हंसी की प्रत्येक रेखा एक नृत्य करती लहर बन जाती है। परन्तु जब तुम उदास मुख से उसमें झांकते हो तो उसका जल तुम्हारे सारे आंसुओं को अपना कर

उन में अपनी मिठास भर देता है।

वृद्ध माता यद्यपि आज तुम्हारे घरेलू जीवन में कोई कार्यगत भाग नही ले सकती, परन्तु तुम्हारे घर के वायुमंडल को सुखी बनाने में उसके प्यार, उसकी आशीश, उसके आलिंगन तथा उसकी सहानुभूति का अभी भी सब से बड़ा हाथ है। इसके महत्व का आभास तुम को उस दिन होगा जिस दिन तुम्हारे घर का वह प्यार भरा कोना सहसा शून्य हो जाएगा और उन सहज स्वाभाविक आशीशों का स्त्रोत शुष्क हो जाएगा। तब तुम्हें वह दिन याद आएंगे कि जब तुम मां के कमरे में प्रवेश करते थे, तो उसके दुर्बल नेत्रों में एक चमक आ जाती थी, तथा जब कभी तुम्हारा हृदय पट खुला होता था तो तुम्हारा सारा संसार उस चमक से चमाचम हो उठता था। निर्बल बाहें जब तुम्हें गले लगती थी तो तुम्हारे अंग अंग से जीवन की थकावट खीच लेती थी। तुम्हारे प्रत्येक संकट में बाहें डालने वाली मां जब विदा हो जायेगी तब तुम उन अतुल्य, निसंकोच और अटूट कामनाओं का महत्व जान सकोगे जो उसके हृदय से एक नदी के समान प्रवाहित होती रहती थी। जीवन भी एक बार होता है और माँ का प्यार भी। इस प्यार का स्त्रोत जब सूख गया तो फिर ऐसे प्यार की कोई लहर तुम्हारे जीवन को स्पर्श नहीं करेगी। और सारे प्यार कमाए जा सकते हैं, ढूंढे जा सकते हैं, परन्तु माँ का प्यार एक वरदान है। जब तक है, है। जब खो गया तो फिर कोई वस्तु उसकी पूर्ति नही कर सकती। इस वरदान का लाभ न्यूनाधिक सभी बालक प्राप्त करते हैं। परन्तु इसका स्वर्गीय रस वही पान कर सकता है जो बाहर जाते समय माँ की आशीश माँगता और घर आने पर मां से गले मिलता है, उसके पास बैठता है उसकी प्यार भरी आंखों को देखता है, और जब माँ बड़ी उमंग से कहती है, लाल कोई अच्छी सी बात सुनाओ तो वह इस सोच में नहीं पड़ता कि राजनैतिक बातें माँ समझेगी नहीं, नए साहित्य में उसकी दिलचस्पी नहीं। उसने माँ की दुनियां में एक आयु व्यतीत की है। इस दुनियां की कई मधुर स्मृतियाँ हैं। जब जीवन में उसकी माँ का बड़ा विशाल स्थान होता था। किस प्रकार मां ने बड़े संकट के दिन बहुत साहस से काटे थे। किस प्रकार जवान विधवा ने खानदान की इज्जत सम्भाल कर रखी थी। किस प्रकार पड़ोसियों से सराहना प्राप्त की थी। मां को उन दिनों की याद दिलाता है जब उसने अपने सारे गहने बेच कर उसे कालिज भेजा था। वह दिन याद कराता है कि जब उसने एक दिन बड़ा झूठ बोला और वह अत्यन्त लज्जित होकर जीने की अपेक्षा मौत की याचना करता था, परन्तु जब साहस करके उसने अपना दुख मां पर प्रकट कर दिया तो मां (यद्यपि अपने गलत विश्वास के अनुसार) ने उस झूठ को अपना कर भी उसे सच बना दिया।.....न भाईयों को और न बहनों को कभी उस झूठ का पता लगा।

मां की अन्तिम कामना यह होती है कि वह अपने पुत्रों के हाथों में ही अपना अन्तिम श्वास छोड़े । उसे अपने किसी बच्चे का दुख न देखना पड़े। स्वभाविक भी यही है कि मां अपने पुत्रों से पहले ही अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर ले। सौभाग्यवान माताएं अपने पुत्र को गोद में ही अपने प्राण त्याग करती हैं। पुत्र जो पश्चताप के कड़वे आंसुओं से बचना चाहते हों तो वह आज ही अपनी माता के पास जाएं। उसके अपने बच्चों के लिए व्याकुल बाहों को अपने गले में डाले। उसका प्यार अपने माथे पर अनुभव करें। .....

पुत्र अपनी माँ को यह बताने में आनन्द प्राप्त करे कि उन्हें अपने असीम धन (मां के प्यार) की कदर है। यहठीक है कि तुम्हारे नौकर या तुम्हारे बच्चे तुम्हारी माँ की सेवा करते हैं। तुम किसी को मां का निरादर भी नहीं करने देते। परन्तु केवल यही सब कुछ नहीं। तुम्हारी माँ ने तुम्हारे काम स्वयं ही किये थे।.....

जब तुम कहानी सुनना चाहते थे तो उसने कभी यह न

सोचा कि वह तुम्हें क्या सुनाए। उसे पता होता था कि किस समय तुम्हे कौन सी कहानी अच्छी लगती है। तुम्हारे बच्चे अच्छे है। तुम्हारे मित्र भी तुम्हारी मां का आदर करते हैं, परन्तु यह मत भूलें कि यह दुनिया तुम्हारी माँ के लिए ओपरी होती जा रही है। उसके नये रिवाज, उसकी नई चाल, उसके नये मूल्य आए दिन उसके लिए पराए होते जाते हैं। तुम्हारे जवान होते हुए बच्चे बूढ़ी दादी का आदर तो कर सकते है। पर उस के साथ बात नहीं कर सकते। केवल एक तुम ही सारे घर में माँ की दुनिया का एक अंश हो कि जिस अंश को वह भली भान्ति पहचानती है। वह तुम्हें अकेले मिलने की प्रतीक्षा में घड़िया गिनती रहती है। यदि तुम उसकी बातें हुँकारा देकर नहीं सुनते, यदि तुम अपने हाथ से मां पर पंखा नहीं झुलाते, उसके बिस्तर की सिलवटें नहीं निकालते, तो एक दिन तुम इस अवसर को तरसोगे। मां की वस्तुओं से बातें करोगे। उन वस्तुओं को गले से लगाओगे। परन्तु मां अब तुम्हारे काफ़ले के साथ नहीं। तुमने उस प्यारे शरीर का अपने हाथों संस्कार कर दिया कि जिस शरीर से तुम्हारा अपना शरीर उत्पन्न हुआ था।...

तुम जीओगे परन्तु पहले की न्याई अपने को भरा पूरा अनुभव नहीं कर सकोगे। पर यदि तुम उन विरले जनों में से हो कि जिन्हाने अपनी मां के अन्तिम वर्षो को सुखी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, तो तुम्हारा मन पछतावे से मुक्त सदा यह अनुभव करेगा कि मानों तुम्हारी मां सदा तुम्हारे अंग संग है।

(सुरजीत बराड़)

इब्राहिम लिंकन का एक पत्र

अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। वे प्रथम रिपब्लिकन थे, जो अमेरिका के राष्ट्रपति बने। उसके पहले वे एक वकील, इलिनुएस स्टेट के विधायक (लेजिस्लेटर) अमेरिका के हाउस ऑफ रीप्रिजेंटेटिव के सदस्य थे। लिंकन ने एक बार अपने बेटे के स्कूल प्रिंसिपल के नाम पत्र लिखा। एक पिता के रूप में लिखा यह पत्र सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी और आज भी प्रासंगिक है.....

हे शिक्षक!

मैं जानता हूं और मानता हूं कि न तो हर व्यक्ति सही होता है औन न ही होता है सच्चा किंतु तुम्हें सिखाना होगा कि कौन बुरा है और कौन अच्छा। दुष्ट व्यक्तियों के साथ-साथ आदर्श प्रणेता भी होते हैं। स्वार्थी राजनीतिज्ञों के साथ-साथ समर्पित नेता भी होत हैं। दुश्मनों के साथ-साथ मित्र भी होते हैं, हर किरूपता के साथ सुन्दर चित्र भी होते हैं। समय भले ही लग जाए, पर यदि सिखा सको तो उसे सिखाना कि पाए हुए पांच से अधिक मूल्यवान है स्वयं एक कमाना।

पाई हुई हार को कैसे झेले, उसे यह भी सिखाना और साथ ही सिखाना, तीज की खुशियां मनाना। यदि हो सके तो उसे ईर्ष्या या द्वेष से परे हटना और जीवन में छिपी मौन मुस्कान का पाठ पढ़ाना। जितनी जल्दी हो सके उसे जानने देना कि दूसरों को आतंकित करने वाला स्वयं कमजोर होता है, वह भयभीत व चिंतित है क्योंकि उसके मन में स्वयं चोर होता है। उसे दिखा सको तो दिखाना किताबों में छिपा खजाना। और उसे वक्त देना चिंता करने के लिए कि आकाश के परे उड़ते पंछियों का आह्लाद, सूर्य के प्रकाश में मधु मक्खियों का निनाद, हरी-भरी पहाड़ियों से झांकते फूलों का संवाद, कितना विलक्षण होता है

बाकी सफा 15 पर

मां को श्रद्धांजली

"मां तो लैके छां उधारी, उस ने स्वर्ग बनाया,
मां वरगा धणछांवां बूटा, किधरे नज़र न आवे।
बाकी सब दुनियां के बूटे, जड़ सुकिक्यां मुरझा जादे,
एह फुल सुक्कियां, मुरझावे"

– प्रोफैसर मोहन सिंह

जिसने जन्म से लेकर आज तक मेरे अस्तित्व को घड़ा। जिसने बेइन्तहा प्यार, हिम्मत और जीवन को जीने के लिए आसमान से ऊंची शुभ इच्छाएं दी। मेरी आवश्यकताओं के आगे उसकी आवश्यकताएं ज़ीरो हो जाती और मुझे स्वदिष्ट भोजन खिलाने के लिए, उसकी पकवान बनाने की विधि बदल जाती थी। मेरी खुशी उसके साथ बांटने के बिना अधूरी रहती। मेरी खुशियों में उसको ताज़गी मिलती। मेरी सफलताओं की सीढ़ियों की ऊंचाई के साथ वह ऊंची उड़ने लगती। मेरे दुख उसको कुम्हला देते। मुझे अगर किसी के साथ शिकायत होती, तो हर शिकायत उसके पास जाकर लगाती, यही एक अदालत ऐसी थी, जिसकी अपनी शिकायत भी मैं उसी के पास लगता लेती। वह कुछ कर सकती थी, या न, पर उसके पास सुनवाई करके मेरे ज़ख्मों पर मरहम अवश्य लग जाती।

एक ही ऐसा स्थान था मां का घर, जहां हररोज़ जाने को दिल करता था। बेशक दिन में चार बार जाओ तो भी मां खिले मस्तक से इन्तज़ार करती। जहां जाकर मैं अपनी मर्ज़ी से चाए पीने को बनाने के लिए कह सकती थी। फिर बाते ही बातें क्या बताऊं कि बच्चों की पढ़ाई से लेकर शादी में बनाने खाने से लेकर घर की सजावट की – सेहन में लगाए फूलों से लेकर राजनीति तक – बहन भाईयों से लेकर, रिश्तेदारों वा दोस्तों तक बचपन से लेकर जो अब तक हुई – पुरानी बातें जो सौ सौ बार करके अभी भी ताजी ही हैं।

अब यह अदालत बन्द हो गई। वह इन्तजार करती हुई आंखें बन्द हो गई और वह सुनने वाले कान बन्द हो गए है। पता नहीं अब क्या करेंगे? परन्तु आज सब रिश्तेदारों को इक्ट्ठे देखकर, उनकी सिसकियां सुनकर पता लगा कि वह केवल मेरी मां नही थी, वह किसी की बहन, किसी की भाभी, किसी की मासी, बुआ, ताई या हम बहन भाईयों की मां थी। अपने परिवार के साथ साथ मेरी मां ने दूसरों को भी बहुत प्यार बांटा। उनसे बिछुड़ जाने का धक्का हमें ही नहीं लगा, मायके और ससुराल में सबसे बड़े होने के कारण उन्होंने मां का प्यार सब रिश्तेदारों में बांटा । पता नहीं कितना बड़ा छायादार वृक्ष था मेरी मां कि उसके जाने से प्रत्येक को बहुत बड़ा घाटा अनुभव हो रहा हैं। इतनी रोशन दिमाग़ थी मेरी मां कि मैंने उन्हे कभी टूने तावीज़, पूच्छें, डेरे मसीत की ओर रुख करते नहीं देखा। कभी किसी साधू सन्त को पूजते नहीं देखा। पाठ, मन्त्र, जाप आदि करने में उन्हें विश्वास नहीं था। ज़िन्दमी के कठिन से कठिन समय में भी उन्होंने हिम्मत से काम लिया। सचाई का दामन कभी नहीं छोड़ा। कभी किसी का बुरा नहीं सोचा। अच्छा बुरा जो महसूस किया, मुंह पर कह दिया। सचाई कहने में कोई झिझक नहीं थी। एक बेहद पारदर्शिनी शीशे की तरह साफ जिन्दगी जीकर बगैर किसी लम्बे दर्द के एक खुशी भरे महौल से सारे रिश्तेदारों को मिलकर वह चली गई। पता नहीं कहां? परन्तु हमें जीने का एक राह दिखा गई।

यह दुनियां, जहां हर चीज़ लेने देने के हिसाब से तोली जाती है, पर सौदे में नफ़ा नुकसान देखा जाता है,छोटी–2 बातें, फलांको बिमार होने पर हमने फूल भेजे, फलां को शादी में इतना शगुन डाला, उसके लड़के की सिफारिश करके उसकी नौकरी लगवाई –उसको दोबार खाने पर बुलाया, फिर उसने हमारे लिए क्या किया? सगे बहन भाई भी सोचते हैं कि मैंने दूसरेके

बच्चे के लिए यह किया, उसने मेरे लिए क्या किया? इस प्रकार की लेने देने की दुनियां में मां मैंने तेरा मेरा खाता खोलकर देखा तो हैरान रह गई। जहां एक तरफ पूर्ण रूप से पूरी भरी हुई – जन्म मेरी पीड़ा तेरी, बिमारी मेरी पर अनिंन्द्रा तेरी, नम्बर मेरे आए, लड्डू तुमने बांटे, डिगरीयां मैंने प्राप्त की पार्टियां तुमने दी, विवाह मेरा हुआ, पूरा ज़ोर तुमने लगा दिया। मेरी हर खुशी के मौके तुम सबसे पहले सौगातें लेकर पहुंचे। पर मैंने तुम्हारे लिए क्या किया? कुछ भी नहीं। मेरी तरफ का खाता तो बिल्कुल खाली है। परन्तु मेरी प्यारी मां याद रखना तुम शारीरिक तौर पर बेशक चले गए हो, पर तुम्हारे दिए संस्कार सदा हमारे दिल में रहेंगे, और हर दौराहे पर तुम हमारा मार्ग दर्शन करोगे।

अपाकी नाचीज़ बेटी

माता पिता और बच्चे

एक वाद विवाद प्रतियोगिता सुनने का अवसर मिला जिसका विषय था कि "21 वीं शताब्दी में माता पिता को युवा बच्चों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।" कालिजों के विद्यार्थी कुछ इस पक्ष में बोले और कुछ उसके विरुद्ध। तेजी से बदलते हुए समय में ऐसे विचार काफी महत्व रखते हैं। अब बच्चे बहुत छोटी उमर से बाहर के वातावरण के सम्पर्क में आते हैं तो उनकी सोच – विचार पर उसका प्रभाव आवश्यक है। पुराने जमाने में बच्चे माता पिता पर शारीरिक, मानसिक और भावात्मक रूप से पूरे के पूरे निर्भर होते थे, अब उनकी मानसिक और भावात्मक आवश्यकताएं कुछ न कुछ बाहर के वातावरण में अपने अध्यापकों, अपने मित्रों, सहपाठियों से भी पूरी होती हैं। आपस में मिलजुल कर वह सुख दुख भी बांटते हैं, बदलते हुए इन हालातों में यदि हम यह चाहें कि बच्चे पहले की ही तरह माता पिता का हर हस्तक्षेप सहन करेंगे यह ग़ल्त है, परन्तु माता पिता का हस्तक्षेप होना ही नहीं चाहिए यह भी पूरी तरह अनुचित है।

अब आधुनिक समय में माता पिता को एक दोस्त की तरह सलाह दें ताकि उससे वह लाभ भी उठाएं, परन्तु उन्हें यह पता भी न चले कि उनके माता पिता उनकी ज़िन्दगी में हस्तक्षेप कर रहे हैं?

इसके लिए सबसे प्रथम हमें बच्चों के व्यक्तित्व को स्वीकार करके चलना होगा। बेशक माता पिता ने उनको जन्म दिया है परन्तु बच्चा अपना एक नया व्यक्तित्व रखता है। उसको पता नहीं कितनी नसलों के जीन्ज़ मिलते हैं, जो उसके व्यक्तित्व को भिन्न कर देते हैं। फिर घर में यदि दो बच्चे हैं, उनके भी व्यक्तित्व भिन्न भिन्न हैं, आजकल के पढ़े लिखे माता पिता के लिए इस बात को समझना काफी सरल है, परन्तु दिमाग से समझना और उस पर अमल करना बिल्कुल भिन्न भिन्न दो बातें हैं।

सर्वप्रथम बच्चे के व्यक्तित्व को समझकर ही हम उसका मार्ग दर्शन कर सकते हैं। मार्ग दर्शन के लिए सबसे आवश्यक है कि बच्चे के जन्म के साथ ही हम उसे नाचीज नहीं बल्कि अपने मित्र के रूप में देखें, और ज्यों ज्यों बड़ा होता जाए यह मित्रता और गहरी होती जाए। बच्चे के व्यक्तित्व का भी उतना ही सम्मान हो, जितना हम बड़ों का करते हैं। ज्यों ज्यों बच्चा बड़ा होता है, और गल्तियां भी करता है तो उसे उसी सन्मान और स्नेह से उसके विषय में बताया जाए, जैसे हम अपने बराबर वालों के साथ करते हैं। उसको ग़ल्तियों के लिए यदि अपमानित न किया जाए, डांटा न जाए, तो वह

आपकी बात सुनने के लिए तैयार रहेगा।

इससे आगे हर माता पिता को यह समझना आवश्यक है कि ग़ल्तियां बड़ों से भी होती हैं, यदि हम उन्हें कई सूरतों में सहन करते हैं तो बच्चों की कुछ न कुछ गल्तियों को सहन करने की आदत डालनी चाहिए। जब आप बच्चे की किसी ग़ल्ती पर कुछ नहीं कहते और चुप हो जाते हो, तो बच्चा अपने आप कुछ शर्मिन्दगी अनुभव करता है। परन्तु कुछ ऐसी ग़ल्तियां होती हैं, जिनके लिए बच्चे की भावनाओं का आदर करते हुए कहना आवश्यक है जैसे: –

यदि बच्चा किसी बड़े को अपमान जनक शब्द बोलता है, वह झूठ बोलता है, चोरी करता है, गालियां देता है, तो ऐसी सूरत में यदि आप चुप करके सहन करोगे तो उसके व्यक्तित्व में विकार पैदा हो जाएंगे। उसके लिए उसी समय उसको समझाना और आगे से उसकी हानियों से सावधान करना आवश्यक है। कई घरों में ऐसा देखा है कि बचपन में बच्चे माता पिता के सामने बड़ों का अपमान कर जाते हैं, कई जनों के विषय में, जिनसे परिवार का सम्बन्ध ठीक नहीं होता, उनके विषय में अपशब्द बोल जाते हैं, उनकी निन्दा कर जाते हैं, और माता पिता खुश होते रहते है और चुप रहते हैं, उससे सदा के लिए बच्चों की ज़ुबान गन्दी हो जाती है। यह आवश्यक है कि बच्चों को किसी की उमर, रिश्ते, योग्यता के लिए सन्मान करना सिखाया जाए, नहीं तो आपके बोए हुए कांटे जल्दी ही आपको ही चुभने लग जाऐंगे।

इसके लिए यह भी बहुत ज़रूरी है कि माता पिता बच्चों के सामने बड़ों के अवगुणों का बख़ान करना, निन्दा करना, अपमान जनक शब्द बोलने बन्द रखें। यह अवगुण कई परिवारों में देखा जाता है और पढ़े लिखे बच्चे असभ्य भाषा प्रयोग करते हैं, और बड़े होते होते फिर इस आदत में सुधार कठिन हो जाता है, किसी सभा सोसाईटी में बैठने के योग्य ही नहीं रहते। बचपन में किया गया यह हस्तक्षेप बच्चों के जीवन में निख़ार ले आता है।

माता पिता के लिए यह जानना भी बहुत आवश्यक है कि बदलते समय के साथ उन्हें बच्चों से अधिक बदलना पड़ेगा। क्योंकि बच्चों को फुरसत नहीं होती कि वह ऐसा अध्ययन करें कि उन्हें माता पिता के साथ कैसे चलना है। माता पिता को फिक्र की ज़रूरत है कि हमने बच्चों को सुधारना भी है और उनकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को भी कायम रखना है।

सबसे अधिक बच्चों पर माता पिता के व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव पड़ता है। वह जीवन मूल्य माता पिता से सीखते हैं। बेशक दुनियां के ज़ोरदार बहाव में बहकर कुछ समय के लिए वह पथ–भ्रष्ट हो जाएं, परन्तु जो घर के वातावरण और माता पिता के अपने उच्च असूलों की मोहर उनके जीवन पर लग जाती है, वह जवानी के जोश के ठण्डा होने पर अपना रंग दिखाती है। यदि माता पिता अपने बड़ों का आदर करते हैं, घर में निन्दा का वातावरण नहीं बनने देते, बच्चों के सामने झूठ नहीं बोलते, ईमानदार है, कृतज्ञ हैं और जो उनके लिए या बच्चों के लिए कुछ करता है, उसका एहसास खुद रखते हैं, और बच्चों को दिलाते रहते हैं और अपने उपकार कर्त्ताओं के लिए स्वयं कुछ करते हैं और बच्चों से करवाते हैं, तो बच्चे उस रूप में ढल जाते हैं। जिन परिवारों में ईर्ष्या द्वेष और स्वार्थ की गतियां बच्चों के सामने होती रहती हैं, वह उच्च कीमतों के अनुभव से ही वंचित हो जाते हैं, और उनकी ज़िन्दगी अपने लिए और जहां जहां वह सम्बन्धित होते हैं कड़वाहट भरी हो जाती है।

बच्चों क लिए सबसे बड़ी आवश्यकता प्यार की है, जो अपनी बेहद व्यस्त जिन्दगी में माता पिता ज्यादा सूरतों में नहीं दे सकते, लेकिन प्यार देने की भी सीमा

माता पिता ने समझनी है कि प्यार अन्धा न हो जो बच्चे की किसी अनुचित क्रिया पर भी उसको कुछ न कहने दे। बच्चे को प्रशंसा की बेहद आवश्यकता है। उसकी छोटी छोटी उपलब्धियों पर उसे उत्साहित करने की बेहद आवश्यकता है, परन्तु इतनी प्रशंसा न दे दें कि बच्चा अपने आपको वह समझने लग जाए, जो हक़ीक़त में वह है नहीं। इस बैलेंस को बनाना समझदार माता पिता के लिए बेहद ज़रूरी है। कई बार माता पिता पब्लिक में अपने बच्चों के ऐसे गुणों की तारीफ़ करते सुने जाते हैं, जिनके वह कतई हक़दार नहीं होते। उससे अनुचित रूप से बच्चे अंहकारी बन जाते है।

माता पिता का यह भी कर्तव्य है कि वह बच्चे को अपने साथ ही इतना सम्बन्धित न कर लें कि वह दुनियां में जीने के योग्य ही न रहे। बच्चे के जीने का क्षेत्र विस्तृत होना चाहिए। वह आपका बच्चा ही नहीं, वह और बहुत से रिश्तों में बन्धा हुआ है और बड़ा होकर और रिश्ते उसके बनेंगे। इससे भी आगे वह किसी पड़ोसी का भी रिश्ता रखेगा, वह अपने सहयोगियों के साथ भी रिश्ता रखेगा, वह समाज का भी एक अंग है, वह देश का भी एक अंग है, वह इससे भी बढ़कर विश्व का भी एक अंग है, इसलिए उसके व्यक्तित्व में तभी निखार आ सकता है यदि वह इन सारे रिश्तों में अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से पूरा करे और इस विश्व को सुन्दर बनाने में सहयोग दे। जो माता पिता बच्चों के क्षेत्र को विस्तृत नहीं करते और अपने मोह और स्वार्थ के लिए अपने से ही जोड़े रखते हैं और अन्य सम्बन्धों में उनके कर्त्तव्य की ओर से उदासीन रहते हैं, वह बच्चों के व्यक्तित्व को बहुत बौना कर देते हैं।

(सुरजीत बराड़)

सफा 15 का बाकी

अविस्मरणीय, अगाध उसे यह भी सिखाना धोखे से सफलता पाने से असफल होना सम्माननीय है और अपने विचारों पर भरोसा रखना अधिक विश्वसनीय है। चाहें अन्य सभी उनको गलत ठहराए परंतु स्वयं पर अपनी आस्था बनी रहे यह विचारणीय है। उसे यह भी सिखाना कि वह दय के साथ दय हो, किंतु कठोर के साथ हो कठोर। और लकीर का फकीर बनकर, उस भीड़ के पीछे न भागे जो करती हो निरर्थक शोर। उसे सिखाना कि वह सबकी सुनते हुए अपने मन की भी सुन सके। हर तथ्य को सत्य की कसौटी पर कसकर चुन सके। यदि सिखा सको तो सिखाना कि वह दुख में भी मुस्कुरा सके, घनी वेदना से आहत हो, पर खुशी के गीत गा सके। उसे यह भी सिखाना कि आंसू बहते हों तो उन्हें बहने दे, इसमें कोई शर्म नहीं... कहने दे। उसे सिखाना वह सनकियों को कनखियों से हंसकर टाल सके पर अत्यन्त मृदुभाषी से बचने को ख्याल रखे। वह अपने बाहुबल का अधिकतम मोल पहचान पाए परंतु अपने हृदय व आत्मा की बोली न लगवाए। वह भीड़ के शोर में भी अपने कान बन्द कर सके और स्वत: ही अंतरात्मा की सही असवाज सुन सके सच के लिए लड़ सके और सच के लिए अड़ सके। उसे सहानभूति से समझाना पर प्यार के अतिरेक से मत बहलाना। क्योंकि तप–तप कर ही लोहा सोना बनता है, ताप पाकर ही सोना निखरता है। उसे साहस देना ताकि वक्त पड़ने पर अधीर बने सहनशील बनाना ताकि वह वीर बने। उसे सिखाना कि वह स्व्यं पर असीम विश्वास करे, ताकि समस्त मानव जाति पर भरोसा व आस बने यह एक बड़ा–सा लम्बा चौड़ा अनुरोध है पर तुम कर सकते हो, क्या इसका तुम्हें बोध है? सच मानो, मेरा बेटा एक प्यारा–सा नन्हा सा फरिश्ता है।

शुभ संग्राम

मल्लेका (सिरसा)

श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से मानसा डाक्टर सुबोध कुमार जी के पास पहुंचे। उन्हें महोत्सव मुबारक का निमन्त्रण पत्र दिया और उन्हें उनके बेटे की शादी की मुबारक बाद दी। यहां से जोगिन्द्र सिंह जी (पम्मी) श्रीमान जी को कार पर लेने आए हुए थे। सिरसा में दो परिवारों को मिलने का संग्राम किया। डाक्टर पकंज गुप्ता के घर निमन्त्रण पत्र पहुंचाया गया। शाम तक श्रीमान जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी मल्लेका पहुंच गए।

शाम 8 बजे सभा की गई, जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने बाहर के वातावरण में जो बेहोशी, कठोरता, अन्धता पैदा होती है उसका वर्णन किया।

21.11.2015 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि घर-2 लोग दुखी हैं। प्रत्येक मनुष्य के दुख का कारण उसके स्वभाव में होता है। मनुष्य के भाव अर्थात नीच अनुराग उसको दुखी करके उसकी महा हानि करते हैं। सभापति जी ने स्वार्थ भाव, धन का अनुचित प्रेम, काम वासना और नशे के सुख की गुलामी की बहुत सी शिक्षाप्रद और प्रभावशाली घटनाओं द्वारा यह सिद्ध किया कि किसी प्रकार का भी नीच सुख अनुराग मनुष्य का शत्रु है इसलिए वह अपना शत्रु स्वयं बन जाता है। राजनितिज्ञ और साधुओं के उदाहरण दिए जो जेल के भीतर हैं उनके नीच सुखों ने ही उन्हें वहां पहुंचाया है। माईकल जैकसन की असमय मृत्यु इस सचाई का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वह जन बहुत सौभाग्यवान है जो परम पूजनीय भगवान की ज्योति पाकर अपने परिचालक भावों का ज्ञान पा लेते हैं तो उनकी शक्ति के द्वारा नीच भावों से कुछ मुक्त हो जाते हैं।

21.11.2015 शाम 8.15 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि नेचर के भीतर विकास का कारज जारी है। जो जन विद्या प्राप्त करते हैं, उनका विकास लाज़मी है। जो विज्ञान द्वारा विकसित साधनों की सहायता लेते हैं, वह अवश्य लाभ उठाते हैं। परम पूजनीय भगवान का अर्विभाव विकास की उच्चतम देन है। जो जन उनसे जुड़ता है वह अपने जीवन का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर लेता है। अपनी अधिकारी अवस्था के अनुसार अपनी रक्षा और विकास कर लेता है। पापों से मुक्त होकर अनुचित दुखों से बच जाता है और उच्च सुखों का भागी बनता है।

22.11.2015 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया भगवान देवात्मा की शिक्षा प्रकृति के नियमों पर आधारित है। बारिश होने के नियम हैं। गुरूत्व आकर्षण के नियम हैं। नेचर के भीतर परिवर्तन का नियम है। प्रत्येक अस्तित्व बदल रहा है। बच्चा बड़ा होते होते बूढ़ा हो जाता है। एक नियम हम सब पर हावी है, हम सब अपने आपको ठीक समझते हैं। परन्तु हकीकत यह है कि प्रत्येक मनुष्य में कमियां हैं। अहं बढ़ने से उच्च भाव घट जाते हैं। श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी के भाव कमज़ोर हो जाते हैं। अपनी माता प्रति तबदीली का बहुत सुन्दर भावों से वर्णन किया। उनके उपकारों को श्रद्धा से भरकर ब्यान किया। देव समाज के सेवकों के प्रति अपने व्यवहारों के विषय में प्रतिशोध का वर्णन किया। सारा ब्यान बहुत प्रभावशाली था।

22.11.2015 रात 8.15 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। हाज़री 40 से ऊपर थी। इस सभा में बताया गया कि हर मनुष्य का भला और

बुरा सम्बन्धों में है। मनुष्य के विकास के लिए चारों जगतों के सम्बन्ध परम आवश्यक है। उसके शरीर की रक्षा, उसके मान्सिक विकास, सामाजिक कदर कीमतों की सम्बन्धोंं के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। जन्म जाति, रंग के आधार पर भेदभाव मिथ्या हैं। अछूत समझ कर नफरत महा घातक है। सती जैसी भयानक रस्म विकास के कारण ही बन्द हुई है। गुलामी की दरिंदगी अब खत्म हो चुकी है। जैसे जैसे सच्चे धर्म का विकास होगा, मनुष्य के भीतर उच्च भाव पैदा होने आवश्यक हैं। उच्च बोध जीवन की रक्षा और विकास करते हैं। वह ईमानदार, शुक्रगुज़ार, हमदर्द, न्यायप्रिय, श्रद्धावान जन पैदा करते हैं। सभापति जी ने अपने जीवन में आए परिवर्तन का शुक्रगुज़ारी के भाव से वर्णन करते हुए कहा कि गुरू का यह हुक्म है कि मै गुरू का ही कारज करूं, नहीं तो कीड़े पड़कर मरूंगा।

23.11.2015 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने विद्यार्थियों को अच्छे मनुष्य बनने, अपने माता पिता और अध्यापिकों को सन्मान करना समझाया। अच्छा मनुष्य उच्च गुणों के बिना नहीं बन सकता। सन्मान भाव की निशानियां हैं, सन्मान भावी अपने बड़े को ऊंचा स्थान देगा, 'जी' कहकर बुलाएगा। हाथ जोड़कर, झुककर प्रणाम करेगा, उनकी आज्ञा का पालन करेगा। जो दूसरों को सन्मान देगा, वह स्वयं महान बनने के मार्ग पर पड़ जाएगा। थोड़ी विद्या, थोड़ी सेवा प्राप्त करके, थोड़ा प्रचार करे अपने अवगुण अवश्य नज़र आएंगें। वास्तव में हमारे ऊपर यह पद पूर्ण रूप से लागू है।

"मैं अपराधी जन्म का, नख सिख भरे विकार''

पदमपुर (राजस्थान)

मल्लेका से दोनों धर्म सम्बन्धी श्रीमान जोगिन्द्र सिंह जी की सहायता से हनुमान गढ़, गंगानगर होते हुए पदमपुर पहुंचे। डा० मुन्शा सिंह जी ने 8.30 बजे सभा रखी हुई थी।

23.11.2015 रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। गज सिंह वाला, गंगानगर से आए जनों के ईलावा जयपुर से एक श्रद्धालु बी.पी. सिंह के बड़े भाई भी पहुंचे हुए थे। श्रीमान जी ने बताया कि सब मनुष्यों के लिए सच्चा धर्म एक ही हो सकता है। धर्म स्थानों पर धर्म मतों के बढ़ने से धर्म जीवन नहीं मिल रहा। सच्चे धर्म का प्रसार होगा, तो पापों और अपराधों में कमी अवश्य आएगी, मिथ्या अवश्य घटेगी। परम पूजनीय भगवान की सत्य शिक्षा और उनकी शिक्षा के सच्चे धर्म प्रभावों से जीवनों के भीतर उच्च परिवर्तन पैदा होता है। सम्बन्धों में बेहतरी आती है। अधिकारी मनुष्यों का अपनी तरफ ध्यान जाता है। सरदार हरनाम सिंह जी, श्रीमान नौध सिंह जी, श्रीमान पंडित नेतराम जी और नये परिवर्तनों द्वारा गुरु महाराज की सच्ची धर्म शिक्षा का प्रभावशाली वर्णन किया।

24.11.2015 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस सभा में मनुष्य के विकास की संक्षेप कथा वर्णन की। जैसे शरीर के रोगी होने की हानियां है, वैसे आत्मा, रोगी, कमज़ोर, बदसूरत वा अन्धकार ग्रस्त होता है, दुखी होकर मौत को प्राप्त करता है। स्वाद वासना, धम अनुराग, काम वासना, मोह, गुस्सा सब आत्मिक रोग हैं। मनुष्य स्वयं अपने आत्मिक रोग नहीं देख सकता, आत्म रक्षा और विकास भी नहीं कर सकता। अधिकारी आत्माओं को परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सहायता परम आवश्यक है।

24.11.2015 रात 8.30 बजे :- इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि जीवन सम्बन्धों में है। धर्म जीवन उच्च भावों द्वारा प्रदर्शित होता है। सम्बन्धों के बिना उच्च जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत, मनुष्य जगत नेचर के चार विभाग हैं। इनमे से अनेकों

अस्तितवों से मनुष्य का वास्ता पड़ता है। इनमें से किसी की हानि करना अपनी हानि करना है, उनका विकास वा भला करना अपना भला करना है, क्योंकि हम इन चारों से जुडे हुए हैं। नेचर का यह अटल नियम है कि दूसरों को बनाओ और खुद बनो, दूसरों को बिगाड़ो तो खुद बिगड़ो। पूजनीय भगवान ने अपने सेवकों को सेवा का महत्व समझाया है। उनके देव प्रभावों ने मिस्तरी वघावा राम जी को सेवा में लगाकर दाता जी बना दिया। श्रद्धेय पी. वी. कनल जी विद्यार्थियों की सेवा करके धन्य धन्य होते थे। उनको बैंच साफ करने, बच्चों के लिए पानी भरना, घंटी बजाना धर्म के साधन लगते थे। पढ़ाई के साथ नैतिक शिक्षा देकर विद्यार्थियों के चरित्र को सुधारा, उन्हें अपने बच्चों की तरह समझते थे। उनकी समस्याओं को हल करके हमदर्दी के भाव की तृप्ति करते थे। मां की ममता बच्चों पर बरसाते थे। ऐसे उदाहरणों द्वारा परोपकार के महत्व को समझाया।

25.11.2015 सुबह 9.00बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य ने विज्ञान द्वारा बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है, पर अब मनुष्य को सच्चे धर्म की आवश्यकता है। पर धर्म क्या है, इसका मनुष्य को ज्ञान नहीं। धर्म का ज्ञान पाने के लिए मनुष्य को सदीयां लगेंगी। धर्म की आवश्यकता है दुख और नाश से बचने के लिए। आत्मा को जानने, आत्मा की गठन को समझने आत्मिक रोगों को समझने, आत्मिक रोगों की हानियों से बचने, आत्मा को बलवान बनाने का ज्ञान धर्म का ज्ञान है। इन विषयों के बिना धर्म का ज्ञान नहीं हो सकता। धर्मो पाने के लिए उच्च भावों को पैदा करना आवश्यक है। बेईमान और बदचलन धर्मवान नहीं हो सकते। इस सभा में श्रद्धा भाव को सभापति जी ने विस्तार से ब्यान किया। गुरू अंगद देव जी, राजा गोपी चन्द जी, भक्त पूर्ण सिंह जी, ज्ञानी हरी सिंह जी की कथाएं श्रद्धा भाव से श्रद्धा भाव की सुन्दर प्रभावदायक तस्वीर पेश की। एक हीरों के व्यापारी ने अपना सब कुछ श्रद्धा भाव से सुभाष चन्द्र बोस को अर्पण कर दिया। श्री अन्ना हज़ारे के उच्च ईमानदार, देश भक्ति के भाव की महिमा गाई।

25.11.2015 रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि आत्म शुद्धि बिना जीवन का विकास नहीं हो सकता। मिथ्या मुक्ति और सच्ची मुक्ति को स्पष्ट किया। सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन पर रोशनी डालते हुए उनके हानि परिशोध के साधनों का ब्यान किया। उनके महान परिवर्तन की महिमा गाई। कैसे नौकरों के पैरों में झुककर दीनता भाव के साथ क्षमा मांगी। श्रीमान बंसत लाल जी अरोड़ा ने अध्यापिक होते हुए जो हानिपरिशोध किया, उसका उच्च भावों से वर्णन किया। इसी प्रकार श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी अपने जीवन की कई हानि परिशोध की घटनाओं का उच्च भावों से भरकर ब्यान किया।

26.11.2015 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि विकास का नियम महान हस्तियों को पैदा करता है। वह महान हस्तियां मानवता को अपनी विलक्षण प्रतिभा दे जाती हैं। श्री राजा राम मोहन राए जी ने भारत से सती जैसी क्रूर रस्म को खत्म किया। इसी प्रकार गुलामों की दुखों भरी जिन्दगी को देखकर महान लिंकन ने तरस खाया और उस कलंक से अमरीका को मुक्त किया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने धर्म के नाम पर पखंड और मिथ्या दूर करके सच्चे धर्म का ज्ञान दिया है। उन्होंने नीच भावों से मुक्ति और उच्च भावों में विकास को सच्चा धर्म बताया है। सभापति जी ने शुक्रगुज़ारी के उच्च भाव का बहुत विस्तार से वर्णन करते हुए इसे धर्म का आवश्यक अंग बताया। श्रीमान जी ने सरदार जमीयत सिंह और सरदार सावन सिंह जी फरिश्ता तहसीलदार के शुक्रगुजारी के भावों द्वारा हुए उच्च कर्मो का भाव पूर्ण ब्यान किया।

सभापति जी ने अपनी उपकारी माता जी के और अध्यापिकों के उपकारों का हृदय स्पर्शीय वर्णन किया। गुरू महारज के देव प्रभावों ने इन उपकारियों की सेवा का कुछ ऋण चुकाने के साधन भी करवाए। पन्ना दायी के शुक्रगुज़ारी के भाव से की कुर्बानी को भी अनुभव शुक्रगुज़ार ही कर सकते हैं।

26.11.2015 रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने पहले पंडित नेतराम जी का भजन गाया "लोको नीच शक्तियां बुरीयां, छुरियां मार दियां" मनुष्य के नीच सुख अनुराग ही नीच शक्तियां हैं, जो उसे महा दुखी करके उसकी हानि वा महा विनाश करती हैं। काम वासना, धन अनुराग, नशा अनुराग की गुलामी की अनेक उदाहरण दिए और उनका खौफनाक रूप दिखाया। इनको जानने और उनसे बचने के लिए पूजनीय भगवान के देव प्रभावों की अतिषय आवश्यकता है। उन्होंने कई पुराने परिवर्तनों के अतिरिक्त अपने निजी और गंगानगर शहर के नये परिवर्तनों का वर्णन करके, इनसे निजात की सच्ची विधि बताई।

27.11.2015 सुबह 9.00 बजें :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हमारी हस्ती ब्रह्मांड का अंश है। इसलिए बह्मांड के नियम इस पर भी लागू हैं। एक नियम के अनुसार सब हस्त्यिों में परिवर्तन हो रहा है। एक तबदीली विकास है और दूसरी विनाश। हमारी जीवनी शक्ति भी बदल रही है। भला परिवर्तन होना ही विकास और धर्म है। पर हम अपनी हस्ती के सम्बन्ध में बेसुधि में हैं। किसी जाप या पाठ द्वारा इस परिवर्तन को नहीं जाना जा सकता। ईमानदारी जितनी अधिक पैदा होगी, इससे जीवनी शक्ति की ताकत बढ़ती है। पवित्रता, श्रद्धा, सन्मान, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी आदि के भावों से वा दूसरों की सेवा करने से आत्मा की निर्माणकारी शक्ति बढ़ती है। इन भावों से ही हमारे जीने और सुखी रहने की मूल इच्छा पूरी हुई है। कई परोपकारियों की महान सेवा का बहुत सुन्दर वर्णन किया। श्रद्धेय श्रीमान काका जी की झुग्गी झोंपड़ी में जाकर सेवा का विशेष रूप से ब्यान किया। सभा के अन्त में 1050 रूपये दान में प्राप्त हुए।

गंगानगर

27.11.2015 :- को दोनो साथी डाक्टर मुन्शा सिंह जी, श्रीमान B.P. Singh जी की गाड़ी से 2 बजे लगभग गंगानगर पहुंचे। शाम की सभा रखी गई।

27.11.2015 रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बातया कि प्रतिदिन की घटनाएं बताती हैं, धर्मो के बढ़ने के साथ साथ पाप और अत्याचार बढ़ रहे हैं। भृष्टाचार का राज है। कहलाने वाले साधू और राजनैतिक लीडर जेलों में जा रहे हैं। असहनशीलता का वातावरण पैदा हो रहा है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों ने सच्चे धर्म का मार्ग दिखाया है। उन्होंने बताया है कि सब रिश्तों में उच्च व्यवहारों द्वारा धर्म आता है। माता का रिश्ता कितना पवित्र है। महान लिंकन ने और अन्य महापुरूषों ने भी धर्म का आरम्भ घर से बताया है। घर में जो शुभ व्यवहार नहीं कर सकता, दूसरों के दुख को महसूस नहीं कर सकता, दूसरों का ख्याल नहीं रख सकता वह धर्मवान नहीं। इस दर पर आकर मनुष्य अपने किए हुए बुरे व्यवहारों को देख सकता है। अपने आप को जानना अपनी नीच शक्तियों को जानना इस दर पर ही सम्भव है। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि इन प्रभावों के बिना सच्चा भला नहीं हो सकता और धर्म नहीं आ सकता।

28.11.2015 सुबह 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि धर्म की कामना बहुत कम लोगों में होती है। आम लोगों में धन प्राप्ति की इच्छा प्रधान है। धर्म की कामना में भी हमारी इच्छाएं

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

जुड़ी होती हैं, इन्हीं को धर्म के साधन मान लिया जाता है। धर्म क्या हे? धर्म की ज़रूरत क्यों है? इसके विषय में स्पष्ट किया गया। धर्म आत्मा की सेहत का नाम है। कितने जन मिथ्याओं में फंसकर सही ईलाज नहीं करवाते। उनके सम्बन्धियों की मौतें हो जाती हैं। कई आत्म-घात की घटनाएं हो जाती हैं। आत्मा का बोध ही आत्मा की मृत्यु और जीवन प्रभावों का खेल है। नीच असरों द्वारा एक हैडमास्टर साहिब डाकू बनने के लिए मजबूर हो गए। और मौत गले लगा ली। उच्च असरों द्वारा सच्चा विकास होता हे।

28.11.2015 रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि पापी जीवन के भीतर बेसुधि और बेहोशी होती है। सभापति जी ने एक मास्टर की दर्दनाक घटना सुनाई जो शराब के नशें में डूबा रहता था और बर्बाद हा गया। जो शराब में डूबा रहा, पर बच्चे की दवाई नही लेकर आया और बेटा मर गया। देव प्रभावों को लेकर धर्म सम्बन्धी उसके घर तक पहुंचे धीरे-धीरे उसमें उच्च परिवर्तन आया, पत्नी भी धन्य धन्य हो गई। श्री गोबिन्द राम जी को कैसे पवित्र बनाया, श्रीमान अनोख सिंह जी की अफीम छुड़ाकर मरने के किनारे से बचाकर 40 वर्ष और जीवन मिला। श्रीमान रूपचन्द जी के घर में स्वर्ग पैदा कर दिया। उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य का कोई और शत्रु नहीं, वह स्वयं अपना शत्रु है। मनुष्य अपना मित्र देव प्रभावों को पाकर बनता है। परसेवा भी इन प्रभावों के द्वारा होती है। सभा के अन्त में कई जन मिलकर गए कि ऐसे सत्संग की आवश्यकता है, इसको फैलाने में योगदान देने का भी इकरार किया।

29.11.2015 सुबह 9 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि वैज्ञानिकों ने नई खोजें करके युग पलटा दिया है। Internet ने दुनिया कितनी छोटी कर दी है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा, जो देव धर्म के बानी हैं, उन्होंने धर्म की दूनियां में युग पलटा है। उन्होंने फरमाया है कि जैसे विश्व में सब अस्तित्वों में परिवर्तन हो रहा है। ईसा मसीह ने बहुत सूक्ष्म तबदीली के विषय में कहा है, "Think of the adultry, Adultrly is committed" मनुष्य Divine being या ब्रह्म स्वरूप नहीं, उसे झूठ और बुराई प्यारी है। सच्चाई भलाई का शत्रु है। अपनी और औरों की हानि करता है। भला बनने के लिए देवात्मा के देव प्रभावों की आवश्यकता है। उदाहरणों द्वारा सभापति जी ने उपरोक्त सच्चाईयों को स्पष्ट किया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts